ग़ज़ल 12

-रविशंकर श्रीवास्तव

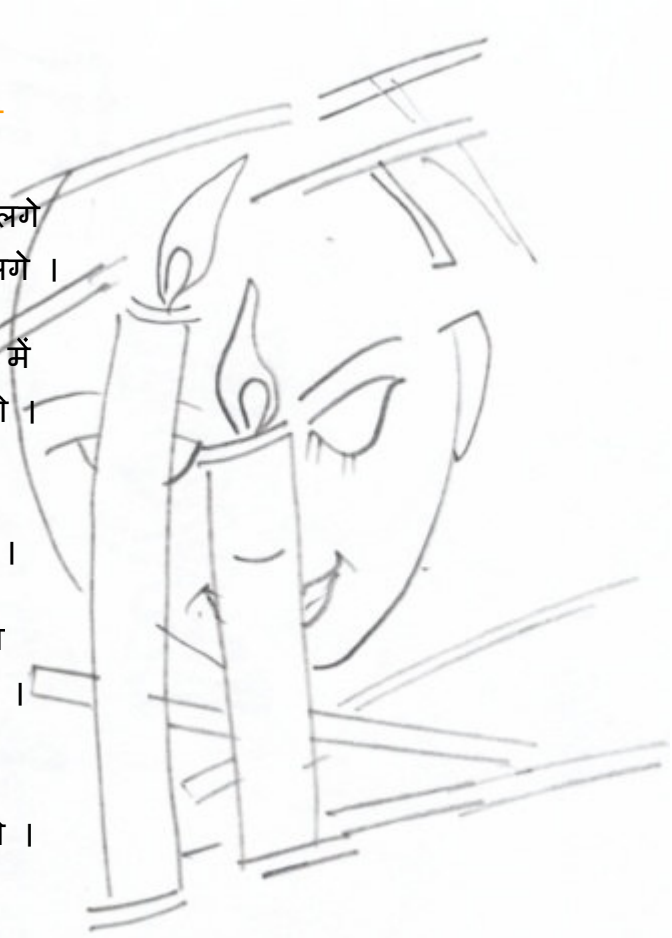

हमसे आप इस तरह क्यूँ शरमाने लगे
नज़र मिला के फिर क्यूँ शरमाने लगे ।

किसी ने कोई बात न की महफिल में
लो वो खुद की बात पे शरमाने लगे ।

ज़रूरत नहीं शै को किसी सबब की
वो आप ही आप ऐसे शरमाने लगे ।

या खुदा क्या होगा मेरे तसव्वुर का
वो ख्वाब में भी आके शरमाने लगे ।

आज क्यूँ ये दुनिया बदली सी है
जाने क्या हुआ कि वो शरमाने लगे ।

कोई तो समझाए रवि को कि क्यों
कल की बात पे आज शरमाने लगे ।

raviratlami@mantrafreenet.com
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,
रतलाम म.प्र. 457001